शोध मंथन Vol. XVI No.I Jan.- Mar. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.877 (SJIF)

विकासखण्ड सितारगंज में थारू महिलाओं की कृषि कार्य में भूमिकाः एक भौगोलिक अध्ययन

प्राप्तिः 2.03.2025
स्वीकृतः 22.03.2025

13

भाग्य श्री
शोधार्थिनी (भूगोल विभाग)
पी.एन.जी. पी. जी. कॉलेज
रामनगर, नैनीताल
ईमेलः shri201718@gmail.com

डॉ0 देवकीनन्दन जोशी
असिस्टेंट प्रोफेसर (भूगोल विभाग)
पी.एन.जी. पी. जी. कॉलेज
रामनगर, नैनीताल

सारांश

हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है जिसमें महिलाओं की मुख्य भूमिका रहती है। महिलाएं राष्ट्रीय एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के कृषि क्षेत्र की प्रगति एवं विकास में उल्लेखनीय योगदान दे रही है। भारतीय एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा कृषि के क्षेत्र में विकास कार्यों को आगे बढ़ाने में ग्रामीण महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। महिलाएं कृषि कार्यबल की बुनियादी रीढ़ है, एक महिला अपने घर के साथ–साथ खेती–बाड़ी में उतनी ही निपुण होती है जितना कि अन्य कार्यो में। कृषि कार्य में महिलाओं की न केवल महत्वपूर्ण भूमिका है अपितु वे स्थायी विकास के लिए आवश्यक रूपांतरकारी आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक बदलावों को अंजाम देने में नेतृत्वकारी की भूमिका में उभर कर आई है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'विकासखण्ड सितारगंज में थारू महिलाओं की कृषि कार्य में भूमिका : एक भौगोलिक अध्ययन' के अन्तर्गत विकासखण्ड सितारगंज की थारू महिलाओं का कृषि कार्य में महत्वपूर्ण योगदान है। महिलाओं द्वारा खाद्य उत्पादन में 60–80 प्रतिशत कृषि कार्य में योगदान है। थारू महिलाएं पुरुषों के साथ कृषि कार्य से लेकर गुणवत्ता और दक्षता उत्पादन के मामले में भी शामिल है। शोध विषय 'विकासखण्ड सितारगंज में थारू महिलाओं की कृषि कार्य में भूमिका : एक भौगोलिक अध्ययन' जिसमें ग्रामीण थारू महिलाओं का कृषि कार्य में अहम योगदान रहा है। थारू महिलाएं आधुनिक तरीकों से एवं उन्नत खेती पद्धतियों में सक्षम होती जा रही है। वह पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती है। पशुपालन से लेकर खेत–बाड़ी के कार्यों में, फसल बोने काटने, रोपाई, खाद, खेतों में सिंचाई आदि सभी कार्यों में महिलाओं की महत्वपूर्ण रहती है। ग्रामीण थारू महिलाएं अपने घर के काम काज के साथ–साथ कृषि कार्यो में भी संलग्न रहती है।

मुख्य बिन्दु

थारू, जनजाति, महिला, कृषि, भूमिका

प्रस्तावना

प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ॰ स्वामीनाथन ने कहा है कि महिलाओं ने ही सबसे पहले फसल को बोया और खेती तथा विज्ञान की शुरुआत की थी। भूमि, जल, वनस्पति और जीव–जन्तुओं जैसे प्राकृतिक

संसाधनों के संरक्षण में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। महिलाएं किसी भी विकसित समाज की रीढ़ की हड्डी होती है। किसी भी समाज में महिलाओं की केंद्रीय भूमिका एक राष्ट्र की स्थिरता प्रगति और दीर्घकालिक विकास सुनिश्चित करती है। महिलाएं किसान श्रमिक और उद्यमी है लेकिन लगभग हर जागह उन्हें उत्पादक तक पहुँचनें में पुरूषों की तुलना में ज्यादा बाधाओं का सामना करना पड़ता है। जनजातीय क्षेत्रों में थारू महिलाओं के जीवन में आर्थिक दृष्टि से कृषि का बहुत महत्व एवं योगदान है। थारू महिलाएं खेतों में काम से लेकर पशुपालन, मुर्गी पालन, बकरी पालन, मधुमक्खी पालन, रेशमकीट पालन और बागवानी आदि कार्यों में जुटी रहती है। थारू महिलाएं पुरूषों के साथ कृषि के सभी कार्यों में मदद करती है, जैसे खेतों में बीज बोना, कीटनाशक दवाओं का झिड़काव करना, धान की रोपाई करना, खेतों में नराई–गुणाई करना और फसलों को काटनें में सहायता करती है। वे कृषि मजदूरी कमाने और कुटीर उद्योग के माध्यम से घरेलू आय के लिए भी महत्वपूर्ण योगदान देती है।

अध्ययन क्षेत्र

विकासखण्ड सितारगंज उत्तराखण्ड राज्य के जिला ऊधम सिंह नगर के दक्षिण में स्थित है। सितारगंज की उत्तरी सीमा जिला नैनीताल से लगती है तथा सितारगंज की दक्षिणी सीमा उत्तर प्रदेश के पीलिभीत जिला से लगती है। सितारगंज का अंक्षाशीय विस्तार 28.93° उत्तर तथा देशान्तरीय विस्तार 97.70 पूर्व के बीच पाया जाता है। सितारगंज विकासखण्ड में निवास कर रहे थारू जनजाति के लोग जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। जिनमें से थारू महिलाओं का योगदान कृषि क्षेत्र में 50 प्रतिशत तक है। सितारगंज क्षेत्र की मिट्टी बहुत ही समतल, नम और उपजाऊ होती है, जो फसल उत्पादन में बहुत लाभकारी है।

विकासखण्ड सितारगंज का मानचित्र

सितारगंज में थारू महिलाओं की जनसंख्या

ऊधम सिंह नगर में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या सबसे अधिक पायी जाती है। ऊधम सिहं नगर में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 1,23,037 है। जिसमें से विकासखण्ड सितारगंज में थारू जनजाति की कुल जनसंख्या 36,992 है। जिसमें पुरुषों की कुल जनसंख्या 18,616 है और महिलाएं 18,376 है।

2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या

कुल जनसंख्या	कुल पुरुष	कुल महिला
36,992	18,616	18,376

साक्षरता दर

थारू जनजाति में पहले पुरुष ही पढ़ने जाते थे थारू महिलाओं में शिक्षा का अभाव था, थारू महिलाएं पढ़ती लिखती नहीं थी। पहले की थारू महिलाएं शिक्षा की ओर जागरुक नहीं थी। लेकिन धीरे–धीरे समय के साथ परिवर्तन आता गया और महिलाएं शिक्षा की तरफ आकर्षित होने लगी। आज के समय में थारू महिलाएं अधिक पढ़ी–लिखी है।

2011 की जनगणना के अनुसार राज्य की अनुसूचित जनजातियों में औसत साक्षरता दर 73.9 तथा पुरुष साक्षरता दर 83.8 व महिला साक्षरता दर 62.5 है।

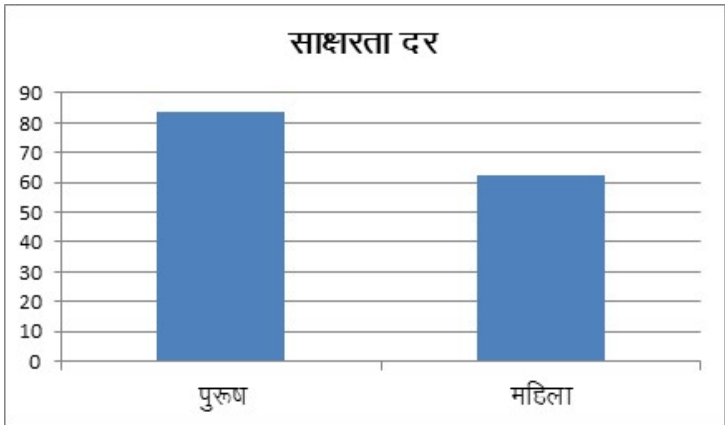

महिलाओं की साक्षरता दर

कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका

थारू जनजातीय समुदाय का मुख्य व्यवसाय या आर्थिक संसाधन कृषि है। थारू महिलाएं पुरुषों की भांति कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ये थारू महिलाएं कृषि सम्बन्धी क्रियाओं में सक्रिय भागीदारी निभाकर कृषि के स्थायी विकास में विशेष योगदान देती है। घरेलू कार्यों के साथ–साथ कृषि में अन्य फसलों व सब्जियों का उत्पादन करके अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधारात्मक विकास करती है। ग्रामीण थारू महिलाएं अपने खेतों में फसलों का उत्पादन करती है। धान, मटर, मक्का, ज्वार, गेहूँ, चना, गहत, जौं आदि का उत्पादन कर अपने परिवार का भरण–पोषण करती है। कृषि क्षेत्र में थारू महिलाओं के योगदान तथा बदली हुई सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप उनकी भूमिका व महत्व को देखते हुए महिला किसानों के प्रोत्साहन की बात की जाए तो देश में केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने हेतु अनेक प्रकार की योजनाएं, नीतियां व कार्यक्रम है।

पशुपालन एवं दुग्ध उत्पादन

पशुपालन कृषि अर्थव्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। पशुपालन प्रबन्धन में भी जनजातीय महिलाओं की भागीदारी बढ़ती जा रही है। अधिकांश पशुपालन व्यवस्था जैसे जानवरों की देखभाल, चारा संग्रह, चारा खिलाना, दूध दोहना, पानी उपलब्ध कराने के साथ–साथ, दूध उत्पादों को बेचना तथा नवजात पशुओं की देखभाल का उत्तरदायित्व थारू महिलाएं बखूवी निभाती है। जनजाति समुदाय में कार्य के लिए पुरुषों के प्रवास के कारण पशुपालन की व्यवस्था के प्रबन्धन में अधिकांश कार्य महिलाओं को करना पड़ता है। पशुधन उत्पादन में महिला श्रमिकों का सबसे बड़ा योगदान है। कुल महिला कामगारों में से 8.8 व कुल पुरुष ग्रामीण कामगारों में 1.8 पशुपालन में लगे हैं पशुपालन, मुर्गी पालन, बकरी पालन, मधुमक्खी पालन, रेशम कीट आदि का उत्पादन कर ये महिलाएं अपने परिवार की आर्थिक धुरी बनी हुई है।

दूध डेयरी में भूमिका

दूध डेयरी उत्पादन में कुल रोजगार में महिलाओं का सबसे बड़ा योगदान है। कुछ वर्षों से डेयरी में ग्रामीण थारू महिलाओं के योगदान को उचित मान्यता दी जा रही है। दूध पिलाने, दूध दूहने, नवजात पशुओं की देखभाल करने जैसे कार्य थारू महिलाएं पूर्णरूप से संभालती है। थारू महिलाएं डेयरी पशुओं को पालने में सक्रिय भूमिका निभा रही है। ये थारू महिलाएं विपणन से सम्बन्धित गतिविधियों जैसे दूध बिक्री व खरीद में बढ़–चढ़कर भाग लेती है तथा अपनी पारिवारिक आर्थिक स्थिति को मजबूत करती है।

भेड़ एवं बकरी पालन में भूमिका

ग्रामीण परिवारों की अधिकांश भूमिहीन पर्वतीय जनजाति महिलाएं अपनी आर्थिक स्थिति या अपना जीवन यापन करने के लिए भेड़ एवं बकरी पालन करती है। पहाड़ी क्षेत्रों में एक परिवार द्वारा पाली जाने वाली बकरियों की औसत संख्या 1 से 5 के बीच होती है। पशु कच्चे माल जैसे ऊन, खाल व हड्डियां आदि को बेचकर महिलाएं अपनी आय को बढ़ाती है। ग्रामीण महिलाओं के लिए पशुपालन आय का एक मुख्य स्त्रोत है।

थारू जनजाति के लोगों की प्रमुख फसलें निम्नलिखित है–

धान– थारू लोगों की प्रमुख फसलों में से एक फसल धान है। इसके पनपने की आदर्श दशाएं यहां पर पाई जाती है। सितारगंज एवं खटीमा में इसका उत्पादन लगभग 80–90 धान प्राप्त होता है। इन क्षेत्रों में खाद्यान्नों के अन्तर्गत क्षेत्र के 90 भाग पर धान बोया जाता है।

धान की रोपाई जून–जुलाई के महीने में की जाती है तथा अक्टूबर–नवम्बर के माह में इसकी कटाई की जाती है। बोते समय 20 तथा पकते समय तापमान 27 होना चाहिए। इसको प्रचुर मात्रा में प्रकाश की धूप की आवश्यकता होती है। खेतों में 75 दिनों तक पानी भरा रहना चाहिए। साधारणतः सिंचित क्षेत्रों तथा 75 से 200 सेमी वर्षा वाले भू–भागों में धान बोया जाता है।

धान की फसल के लिए उपजाऊ चिकनी, कछारी अथवा भारी दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है। जिससे धान की जड़े बंधी रहे और पौधा खड़ा रह सके। धान की फसल अच्छी हो इसके लिए थारू लोग अपने खेतों में कीटनाशक दवाओं का तथा यूरिया खाद का उपयोग करते है।

गेंहूं– धान की फसल के बाद थारू लोगो की मुख्य फसल गेंहूं है। रवि की फसल में कुल कृषि भूमि के 70–80 प्रतिशत भाग पर गेंहूं का उत्पादन किया जाता है। गेंहूं के पकने के लिए अधिक गर्मी की

आवश्यकता पड़ती है। जाड़े के आरम्भ से अर्थात् अक्टूबर–नवम्बर में बोया जाता है। गेंहूं को बोते समय तापमान 10 से 15 तक और पकने के साथ 20 से 28 तक साधारणतः उपयुक्त माना जाता है।

गेंहूं को बीते समय भूमि में नमी अथवा सिंचाई की आवश्यकता होती हैं। गेंहूं के लिए आदर्श वर्षा 50 से 75 सेमी मानी गयी है अथवा फसल काल में 2 या 3 बार अच्छी वर्षा होना आवश्यक है। इसके लिए हल्की दोमट या गहरे रंग की मटियार मिट्टी अच्छी रहती है। काली मिट्टी में भी यह पैदा किया जाता है।

दाल– थारू जनजाति के लोग दालों में मुख्यतः मसूर एवं उड़द की दाल का उत्पादन करते है। ये लोग खाने में मसूर की दाल एवं चावल अधिक पसन्द करते है। इसलिए रवि की फसल में कृषि भूमि का 5–10 प्रतिशत भाग में उत्पादन किया जाता है। मसूर को पानी की आवश्यकता नहीं होती है। ये फसल अक्टूबर–नवम्बर में बोयी जाती है तथा मार्च–अप्रैल में काटी जाती है।

अन्य फसलें– अन्य फसलों में थारू लोग मुख्य रूप से गन्ना एवं मटर का उत्पादन करते है। गन्ने के लिए उपजाऊ दोमट मिट्टी तथा नमी से पूर्व भूमि उपर्युक्त होती है। गन्ने की फसल को तैयार होने में लगभग एक वर्ष लग जाता है। अंकुर निकलते समय 20 तापमान की आवश्यकता होती है। 30 अधिक और 16 से नीचे के तापमान में यह पैदा नहीं हेाता है। यह 100 से 200 सेमी वर्षा वाले भागों में भली प्रकार से पैदा किया जा सकता है।

बीज– उन्नत फसल के लिए उन्नत बीज का होना अनिवार्य है। थारू समाज में लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। थारू जनजाति के लोगों ने जंगलों व झाड़ियों को काटकर अपने खेतों को तैयार किया है। ये लाग स्थायी खेती करते है। अच्छी पैदावार के लिए अच्छे किस्म के बीजों की प्राप्ति बाजार से करते हैं इसके अतिरिक्त कुछ लोग घर की फसल से ही बीजों का चुनाव कर लेते है। स्थानीय बाजार में प्रमाणित बीज की कीमत सामान्यतः बहुत अधिक होने के कारण छोटे अथवा सीमान्त किसान इनका प्रयोग नहीं कर पाते है और वे घर की फसल से ही अच्छे बीजों का चयन कर लेते है।

उर्वरक एवं कीटनाशक दवाएं– थारू जनजाति के लोग रासायनिक खाद तथा उर्वरक का प्रयोग उपयुक्त मात्रा में करते है। खाद की प्राप्ति इन लोगों को सहकारी खाद भण्डार एवं बाजार से होती है। साथ ही ये लोग पशुओं के मल से जैविक खाद तैयार करके भी अपने खेतों में उसका प्रयोग करते है। फसलों में रासायनिक कीटनाशक दवाओं की प्राप्ति स्थानीय बाजार की दुकानों से करते है।

सिंचाई– सिंचाई कृषि के लिए सबसे अनिवार्य है। बिना सिंचाई के किसी भी फसल का उत्पादन नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार थारू लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि होने के कारण इनके सिंचाई के साधनों में तालाब, ट्यूबबैल एवं नहर प्रमुख साधन है। तराई में स्थित होने के कारण यहां की भूमि पानी से तर मानी जाती है। परन्तु वर्तमान समय में भूमिगत जलस्तर में कमी प्रतीत हुई है। जनअवलोकन एवं अनुभवों के अनुसार पहले के नलकूप एवं लोगों के घरों में लगे हैण्डपम्प में पानी हमेशा रहता था, किन्तु अब गर्मियों के समय में नलकूप एवं घरों में हैण्डपम्प सूख जाते है। जिससे लोगो को जून में मानसून का वेसब्री से इन्तजार रहता है। इस क्षेत्र में तालाबों के द्वारा बहुत कम ही सिंचाई करते है।

तालिका 5.1 : विकासखण्ड सितारगंज में सिंचाई के स्त्रोतों का वितरण प्रतिशत में–

सिंचाई के साधन	सिंचित कृषि भू–भाग (प्रतिशत में)
तालाब	8
नहर	22
ट्यूबबैल	70

कृषि संरक्षण में थारू महिलाएं

थारू महिलाओं का कृषि क्षेत्र में विशेष योगदान है। वह पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती है। वह घर के काम काज से लेकर खेतों का भी काम करती हैं। धान, गेंहू, मटर, सोयाबीन, उड़द, मसूर, मूंगफली, सरसों फसलो का उत्पादन, कटाई, नराई, गुणाई तथा रोपाई कर फसलों का संरक्षण करती है। कृषि को फसल में लगने वाली बीमारियों तथा कीड़ों से बचाव के लिए कीटनाशक दवाओं का उपयोग करती है।

निष्कर्ष

किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में महिलाओं की भागीदारी के फलस्वरूप ही सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक विकास भी कल्पना संभव है। थारू महिलाएं शिक्षित एवं स्वावलंबी होकर लघु एवं कुटीर उद्योगों को अपनाकर आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ एवं आत्मनिर्भर होती जा रही है। साथ ही असहाय, निरक्षरता व बेरोजगारी के भबर से निकलकर अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रही है व महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दे रही है। थारू महिलाएं स्वयं को गृहकार्य के साथ–साथ प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ा रही है। शिक्षित थारू महिलाएं गृहकार्य के उपरान्त अपने बच्चों की शिक्षा में भी विशेष ध्यान दे रही है। संक्रमणाधीन समाज के सम्पर्क में आने के प्रभाव के कारण थारू महिलाओं के जीवन में अनेक परिवर्तन हुए इन परिवर्तनों के कारण ही ये शैक्षिक सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक क्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग ले रही है तथा अपने परिवार की आर्थिक उन्नति का एक ज्वलन्त उदाहरण साबित हो रही है।

सन्दर्भ

1. जोशी, योगेश चन्द्र, थारू जनजाति एक अध्ययन शोध प्रबन्ध, कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल
2. डॉ. रीता गौतम, थारू जनजाति के सामाजिक परिवेश एवं मौलिक अधिकार का विश्लेषणात्मक अध्ययन, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।
3. डॉ. राजकुमार गोयल, कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारीः लोकतांत्रिक समावेशीकरण का पथ, सेठ बिहारीलाल छाबड़ा राजकीय महाविद्यालय, अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर)।
4. अनुसूचित जनजाति कल्याण विभाग, उत्तराखण्ड सरकार।
5. डॉ. बसन्ती रौतेला, उत्तराखण्ड में ग्रामीण स्त्री जीवन का वास्तविक स्वरूप, शोध पत्र।
6. उत्तराखण्ड : एक समग्र अध्ययन परीक्षा वाणी, केशरी नन्दन त्रिपाठी, बौद्धिक प्रकाशन।
7. अशोक कुमार, जनजातीय महिलाओं की समस्याएं, समाधान एवं विकास, राजकीय डूंगर महाविद्यालय बीकानेर, राजस्थान।
8. कुटीर उद्योग में संलग्न महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति का अध्ययन, हेमचन्द विश्वविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)।